بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 9 अगस्त 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

मरीसीअ युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का बयान तथा बंगला देश एवं पाकिस्तान के अहमदियों और मध्यपूर्व एशिया के मुसलमानों के लिए दुआ की तहरीक।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-09.08.24

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- मरीसीअ नामक युद्ध के बारे में वर्णन हो रहा था, यह भी वर्णन हुआ था कि अब्दुल्लाह बिन अबी ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्बंध में अनुचित बातें कीं तथा मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) वाला रंग धारण किया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में इस घटना को सविस्तार बयान करते हुए लिखा है कि युद्ध की समाप्ति के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ दिनों तक मरीसीअ नामक स्थान पर विश्राम फ़रमाया किन्तु इस निवास के समय मुनाफ़िक़ों की ओर से एसी कष्टदायक घटना पेश आई कि जिसके कारण सम्भावना थी कि कमज़ोर मुसलमानों में गृह-युद्ध जैसी स्थिति पैदा हो जाती किन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवेक एवं दूरदर्शिता तथा चुम्बकीय प्रभाव ने उसके भयानक परिणामों से मुसलमानों को बचा लिया।

घटना इस प्रकार हुई कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु का एक नौकर जहजाह नामक मरीसीअ के एक स्रोत पर पानी लेने गया तो संयोगवश उसी समय एक अन्य व्यक्ति सनान नामक भी, जो अन्सार के साथियों में से था, वहाँ पानी लेने आ पहुंचा। ये दोनों व्यक्ति मूर्ख एवं साधारण लोगों में से थे। स्रोत पर ये दानों व्यक्ति आपस में लड़ पड़े। जहजाह ने सनान पर एक वार कर दिया। सनान ने ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरु कर दिया कि ऐ अन्सार के लोगो! मेरी सहायता के लिए आओ। जब जहजाह ने यह देखा तो उसने भी मुहाजिरों के दल को अपनी सहायता के लिए पुकारा। जिन अन्सार तथा मुहाजिरों के कानों में यह आवाज़ पहुंची वे तलवारें लेकर पानी के स्रोत की ओर लपके और देखते देखते वहाँ भीड़ जमा हो गई। सम्भावना थी कि दोनों दल एक दूसरे पर हमला कर देते, ऐसे में कुछ समझदार लोगा ने मुहाजिर तथा अन्सार को अलग अलग करवा कर सन्धि करवा दी। आँहूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक यह बात पहुंची तो आपने इसे मूढ़ता का प्रदर्शन बताया तथा अप्रसन्नता जताई। तब मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल को इस घटना की सूचना मिली तो उसने इस उपद्रव को फिर भड़काना चाहा। उसने अपने साथियों को आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों के विरुद्ध ख़ूब उकसाया तथा यहाँ तक कह दिया कि जब हम मदीने जाएँगे तो सम्मानित व्यक्ति अथवा दल, अपमानित व्यक्ति अथवा दल को नगर से बाहर निकाल देगा। उस समय एक निष्ठावान मुसलमान बच्चा ज़ैद बिन अरक़म रज़ीयल्लाहु अन्हु वहाँ मौजूद था। उसने ये शब्द सुने तो तुरन्त अपने चचा के माध्यम से इस बात की सूचना आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुंचाई। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने ये शब्द सुने तो क्रोध से भर गए तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अब्दुल्लाह बिन अबी के वध की अनुमति चाही। किन्तु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विनम्रता करने का इरशाद फ़रमाया तथा अब्दुल्लाह एवं उसके साथियों को बुला भेजा। उन्होंने क़सम खाई कि हमने ऐसी कोई बात नहीं कही। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसी समय प्रस्थान करने का निर्देश दिया तथा मुस्लिम सेना रवाना हो गई। उस अवसर पर उसैद बिन हज़ीर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तुरन्त सहसा प्रस्थान के विषय में पूछा तो आप स. ने फ़रमाया कि तुमने अब्दुल्लाह बिन अबी के शब्दों को नहीं सुना। उसैद ने कहा कि हाँ, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप चाहें तो मदीना पहुंच कर अब्दुल्लाह बिन अबी को नगर से निकाल सकते हैं।

जब अब्दुल्लाह बिन अबी के बेटे को पता चला तो उन्होंने आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप मुझे आदेश दें तो मैं तुरन्त अब्दुल्लाह बिन अबी का सिर आपकी सेवा में पेश कर दूँ। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि न मैंने उसकी हत्या करने का निश्चय किया है तथा न ही किसी को इसका आदेश दिया है। हम अवश्य उसके साथ सुन्दर व्यवहार करेंगे। उस यात्रा के समय रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्यी अवतरित हुई जिससे ज़ैद बिन अरक़म रज़ीयल्लाहु अन्हु के बयान की पुष्टि हो गई।

हज़रत मस्लेह मौऊद रज़ी. यह पूरी घटना बयान करने के बाद फ़रमाते हैं कि जब इस्लाम की सेना मदीने के निकट पहुंची तो अब्दुल्लाह बिन अबी के बेटे ने आगे बढ़ कर अपने बाप का रास्ता रोक लिया और कहा कि मैं तुम्हें मदीने के अन्दर दाख़िल नहीं होने दूँगा, जब तक कि तुम वे शब्द वापस न ले लो जो तुमने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध उपयोग किए हैं। जिस मुंह से यह बात निकली है कि ख़ुदा का नबी अपमानित है और तुम सम्मानित हो, उसी मुंह से तुम्हें यह बात कहनी होगी कि ख़ुदा का नबी सम्मानित है तथा तुम अपमानित हो। अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल चकित एवं भयभीत हो गया और कहने लगा- ऐ मेरे बेटे! मैं तुमसे सहमत हूँ, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रष्ठित हैं तथा मैं अशिष्ट हूँ। युवा अब्दुल्लाह ने इस बात पर अपने बाप को छोड़ दिया।

इस यात्रा के समय हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनी गुम हो गई थी। मुनाफ़िक़ों में से एक व्यक्ति इस पर ख़ुशियाँ मनाने लगा और एक मजलिस में कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तो अदृश्य लोक की बड़ी बड़ी ख़बरें मिल जाती हैं तो क्या इस ऊँटनी की सूचना नहीं मिल सकती। मजलिस में मौजूद लोगों ने उसकी पाखंडी बातों को सुना तो उसे अपने आपसे अलग कर दिया। वह व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में पहुंचा तो आप स. ने फ़रमाया कि इस घटना पर एक व्यक्ति ख़ुशियाँ मना रहा है, अदृश्य लोक का ज्ञान केवल अल्लाह तआला को है तथा उसने मुझे उस ऊँटनी के विषय में बता दिया है, वह सामने उस घाटी में है। इस पर वह मुनाफ़िक़ व्यक्ति चकित रह गया तथा अत्यंत लज्जित हुआ। उसने अपने साथियों की मजलिस में कहा कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में सन्देह था, किन्तु आज सारा सन्देह दूर हो गया तथा ऐसा लगता है कि मैं आज ही मुसलमान हुआ हूँ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इसकी और अधिक विस्तृत जानकारी तथा अन्य घटनाएँ इन्शाअल्लाह आगे बयान होंगी। फ़रमाया- इस समय मैं बंगला देश के हालात के सम्बंध में भी कुछ कहना चाहता हूँ। शासन के विरुद्ध वहाँ फ़साद हुआ था, शासन तो समाप्त हो गया परन्तु फ़साद जारी है, कल से कुछ सुधार हुआ है। इन हालात में जमाअत के विरोधी दल ने अवसर पा कर अहमदियों को हानि पहुंचानी शुरु कर दी है। हमारी कुछ मस्जिदों में तोड़ फोड़ की गई तथा उन्हें जलाया गया। जामिअः अहमदियः तथा जमाअत के भवनों को हानि पहुंचाई गई, वहाँ तोड़ फ़ोड़ की गई और सामान जलाया गया। कई अहमदी ज़ख़्मी हुए हैं, उनके घरों को जलाया गया है, नुक़सान पहुंचाया गया है। कुछ घरों को पूर्णतः जलाए जाने की सूचना मिली है, क़ानून व्यवस्था पूर्णत्या अस्त-वयस्त है।

अहमदियों को उस इलाक़े में जलसे के समय दो बार हानि उठानी पड़ी है परन्तु उनका ईमान नहीं लड़खड़ाया। अल्लाह तआला की कृपा से ईमान मज़बूत हैं और उन्होंने कहा है कि अल्लाह

तआला के लिए हम यह सब सहन करेंगे। अल्लाह तआला दया एवं कृपा फ़रमाए तथा अहमदियों को अपनी अमान में रखे, विरोधियों की पकड़ फ़रमाए।

इसी तरह पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें, वहाँ पर फिर कठोर अवस्था उत्पन्न हो गई है। अल्लाह तआला उन्हें भी हर एक कष्ट से बचाए। आजकल मुल्लाँ तथा स्वार्थी लोग अहमदियों के विरुद्ध पुनः अग्रसर हैं। अल्लाह तआला तथा रसूलुल्लाह के नाम पर ये लोग अत्याचार कर रहे हैं। अल्लाह तआला उनकी पकड़ के भी जल्दी सामान फ़रमाए।

मध्य पूर्व क मुसलमानों के लिए भी दुआ करें, ये आपस में जो अत्याचार कर रहे हैं, ये समाप्त हों और ये अल्लाह तआला से वास्तविक सम्बंध पैदा करने वाले हों, ज़माने के इमाम को मानने वाले हों, यही इनकी मुक्ति का रास्ता है।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाया तथा जनाज़े की नामज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

मुकर्रम डा. ज़काउर्रहमान साहब शहीद सुपुत्र चौधरी अब्दुर्रहमान साहब लाला मूसा, ज़िला गुजरात। मृतक को पिछले दिनों जलसे के दिनों में 53 वर्ष की आयु में शहीद कर दिया गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मृतक धन के बलिदान में अग्रसर, समाज सेवा की भावना रखने वाले, निर्धनों का मुफ़्त इलाज करने वाले थे। मृतक ने परिजनों में पतनी के अतिरिक्त एक बेटा तथा तीन बेटियाँ यादगार छोड़ी हैं। 2- मोहतरमा सईद बशीर साहिबा पतनी मलक बशीर अहमद साहब। मृतक मलिक ग़ुलाम अहमद साहब मुरब्बी सिलसिला घाना की माता जी थीं जो मैदाने अमल में होने के कारण अपनी माता जी के जनाज़े तथा तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सके। मृतक तहज्जुद गुज़ार, पंजवक़्ता नमाज़ों की पाबन्द, ख़िलाफ़त से निष्ठा एवं श्रद्धा का सम्बंध रखने वाली, दुआएँ करने वाली, अल्लाह की रज़ा पर राज़ी रहने वाली नेक एवं बुज़ुर्ग महिला थीं। हुज़ूरे अनवर ने मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131